This question paper contains 3 printed pages.

Your Roll No. .....

Sl. No. of Ques. Paper: 2368 HC

Unique Paper Code : 52051121

Name of Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (A)

Name of Course : B.Com. (Prog.) CBCS

Semester : I

Duration : 3 hours

Maximum Marks : 75

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कबीरदास अथवा मीराँबाई की काव्यगत विशेषताएँ बतलाइए। 10

2. बिहारी अथवा घनानन्द का साहित्यिक परिचय दीजिए। 10

3. मैथिलीशरण गुप्त अथवा दिनकर की कविता का काव्य-सौष्ठव लिखिए। 10

4. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) कबीर इस संसार कौ, समझाऊँ कै बार
पूँछ जौ पकड़ै भेड़ की, उतर्‌या चाहै पार।
जांनि बूझि सांचहिं तजै, करैं झूठ सूँ नेह।
ताकी संगति राम जी, सुपिनैं ही जिनि देह।।

P. T. O.

This question paper contains 3 printed pages.

Your Roll No. ....

Sl. No. of Ques. Paper: **2368**

HC

Unique Paper Code : **52051121**

Name of Paper : **Hindi Bhasha Aur Sahitya (A)**

Name of Course : **B.Com. (Prog.) CBCS**

Semester : **I**

Duration : **3 hours**

Maximum Marks : **75**

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कबीरदास अथवा मीराँबाई की काव्यगत विशेषताएँ बतलाइए। **10**

2. बिहारी अथवा घनानन्द का साहित्यिक परिचय दीजिए। **10**

3. मैथिलीशरण गुप्त अथवा दिनकर की कविता का काव्य-सौष्ठव लिखिए। **10**

4. निम्नलिखित पद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) कबीर इस संसार कौ, समझाऊँ कै बार
पूँछ जौ पकड़ै भेड़ की, उतर्‌या चाहै पार।
जांनि बूझि सांचहिं तजै, करैं झूठ सूँ नेह।
ताकी संगति राम जी, सुपिनैं ही जिनि देह।।

अथवा

म्हारो गोकुल रो बजवासी।
बजलीला लख जण सुख पावाँ, बजवणताँ सुखरासी।
णाच्याँ गावाँ ताल बज्यावाँ, पावाँ आणँद हासी।
णन्द जसोदा पुन्न री प्रगट्याँ, प्रभु अनिवासी।।
पीताम्बर कट उर बैजणताँ, कर सोहाँ री बासी।
मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, दरसण दीज्यो दासी।।

(ख) बसै बुराई जासु तन, ताही कौ सनमानु।
भलौ भलौ कहि छाड़ियै, खोटैं ग्रह जपु, दानु।।
नीच हियैं हुलसे रहैं गहे गेंद के पोत।
ज्यौं ज्यौं माथैं मारियत, त्यौं त्यौं ऊँचे होत।।

अथवा

हीन भएँ जल मीन अधीन कहा कछु मो अकुलानि समानै।
नीर सनेही कौं लाय कलंक निरास ह्वै। कायर त्यागत
प्रानै।
प्रीति की रीति सु क्यौं समझै जड़, मीत के पानि परे कौं
प्रमानै।
या मन की जु दसा घनआनँद, जीव की जीवमि जान ही
जानै।

(ग) तू पूछ, अवध से, राम कहाँ,
वृन्दा! बोलो, घनश्याम कहाँ?
ओ मगध! कहाँ मेरे अशोक?
वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ?

अथवा

अधिकार खोकर बैठ रहना, यह महा दुष्कर्म है।
न्यायार्थ अपने बन्धु को भी दण्ड देना धर्म है।
इस तत्व पर ही कौरवों से पाण्डवों का रण हुआ।
जो भव्य भारत वर्ष के कल्पान्त का कारण हुआ।

10+10+10

5. (क) निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए:

(क) सगुण भक्ति काव्य

(ख) रीति मुक्त काव्य

(ग) छायावाद

(घ) आधुनिक भारतीय भाषाएँ

(ङ) हिन्दी भाषा। 5×3=15